

बाल नाटक शृंखला

बच्चों की कचहरी



केशवचंद्र वर्मा
रेखांकन: कनिका नायर

बच्चे परेशान हैं। बड़े लोगों से। जो उनके अधिकारों का ख्याल नहीं रखते। बच्चे न्याय चाहते हैं। इसलिए वे खुद ही कचहरी लगाते हैं। जिसमें बच्चे ही फरियादी हैं। बच्चे ही जज हैं। पहला मुकदमा किस पर चला ? उसमें क्या सजा सुनाई गई ? जानिए इस दिलचस्प नाटक से।



भारत ज्ञान विज्ञान समिति

इस पुस्तक का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा बच्चों में रचनात्मकता और पठन-पाठन संस्कृति विकसित करने के लिए 'बाल पुस्तकमाला' के तहत किया गया है।



बच्चों की कचहरी **Bachchon Ki Kachahari**

बाल नाटक **Children's Play**
केशवचंद्र वर्मा Keshavachandra Verma

चित्रांकन **Illustration**
कनिका नायर Kanika Nair

पुस्तकमाला संपादक **Series Editor**
मनोज कुलकर्णी Manoj Kulkarni

प्रथम संस्करण **First Edition**
वर्ष 2014 year, 2014

सहयोग राशि **Contributory Price**
21 रुपये Rs. 21

मुद्रण **Printing**
क्रिसेन्ट प्रिंट सल्यूशन्स Crescent print solutions
तिलक नगर, नई दिल्ली Tilak Nagar, New Delhi

सहयोग : टाटा वेलफेयर ट्रस्ट सोसाईटी मुंबई

ISBN:- 978-93-81811-07-8

ज्ञान विज्ञान प्रकाशन

Publication and Distribution:

Bharat Gyan Vigyan Samiti

Flat No. 59/5, 3rd Floor, Kalkaji Extn., New Delhi-110019

Phone : 011 - 26469773, 26463324

Email : bgvsdelhi@gmail.com. Website : www.bgvs.org



केशवचंद्र वर्मा

रेखांकन: कनिका नायर

पात्र

गोपी

टिल्लो

रामू

परभू

चंपी

माली

जूरी

राजू



(गोल कमरे में सब बच्चे जमा हैं। हल्ला—गुल्ला, शोर।
आपस में बातचीत करने की आवाज।)

गोपी : भई, अगर इतना हल्ला—गुल्ला मचाओगे तो
फिर हम लोग जिस काम के लिए यहां इकट्ठे
हुए हैं वह सौ जनमों में भी न हो पाएगा।

रामू : हां, सुनो। मैं कह रहा हूं कि अगर अपने
अधिकारों के लिए हम लोगों को लड़ना है तो
एका रखकर ही आगे बढ़ सकते हैं। आप सब
लोगों की अगर एक राय हो तभी हम लोग
माली पर मुकदमा चलाएं।

... ऐसे कई आदमी हैं जो हम बच्चों के अधिकारों का ठीक-ठीक ख्याल नहीं करते। हम उन सबको बारी-बारी से अपनी कचहरी में लाएंगे। इसके लिए यह बहुत जरूरी है कि आप सब लोग एक राय होकर हमें बताएं। हम सबसे पहले माली को बुलाना चाहते हैं।

कई बच्चे : हां, हां, माली को जेल में बंद करवा दो दादा! जेल कर दो !!

बैत लगाओ दादा !!!

रामू : (समझाते हुए) ठीक है, ठीक है, सब हो जाएगा। सब हो जाएगा। मगर आपकी राय है न ?

कई स्वर : हां, हां! राय है ... मुकदमा चलाओ।

गोपी : अच्छा तो अब जज किसे बनाया जाए ?

चंपी : राजू दादा को जज बनाओ। एक झापड़ में सबको ठीक कर...

गोपी : चुप रह चंपी। जज कहीं झापड़ थोड़े ही मारता है ! वह तो फांसी देता है, फांसी !

टिल्लो : तब तो परभू भैया को बनाओ। इन्होंने तो जमील को उठा के पटक दिया था। इनको

कह दो, ये फांसी लगा देंगे।

गोपी : तू भी बड़ी उल्लू है टिल्लो। जज थोड़े ही फांसी लगाने बैठता है। जज तो हुक्म करता है सोच-समझकर...

परभू : मेरी मानो। मैं कहूं भाई सोचने-समझने वाली बात है। रम्भू दादा को जज बनाओ। अपने बीच वही सबसे होशियार आदमी है। क्यों भाई, क्या कहते हो ?

सब : हां, हां, ठीक है...



(दृश्य बदलता है, कमरा कचहरी की तरह सजा दिया गया है। रामू जज की कुर्सी पर बैठा हुआ है, चार-पांच लड़कों की जूरी बैठी है। टिल्लो, चंपी और गोपी मुकदमा चला रहे हैं। गोपी वकालत कर रहा है। राजू, परभू पुलिस के रूप में मौजूद हैं। हल्ला मचता है।)



रामू : (हथौड़े से मेज ठोकता हुआ) आर्डर, आर्डर।
आप सब चुप बैठिए। मैं अदालत की
कार्यवाही शुरू करना चाहता हूँ। हां, टिल्लो
देवी, आपको क्या कहना है ?

टिल्लो : रामू दादा।

रामू : मिस्टर गोपी, आप इनके वकील हैं। आप
इनको बताइए कि अदालत में कैसे बातचीत
की जाती है।

गोपी : अरे टिल्लो... जज साहब कहो, जज साहब।

टिल्लो : जज साहब... हमने बाग में से एक गुलाब
का फूल तोड़ लिया था। उसके लिए माली
ने हमको डांटा और कहा है कि बाबूजी से
शिकायत कर देंगे।

रामू : माली को पेश किया जाए। राजू ले आओ
जाकर।

राजू : यह हाजिर है जज जी। गोविंद माली हाजिर
है।

सब : (एक साथ) अच्छा, यही है ?

माली : का बात है छोटे सरकार ?

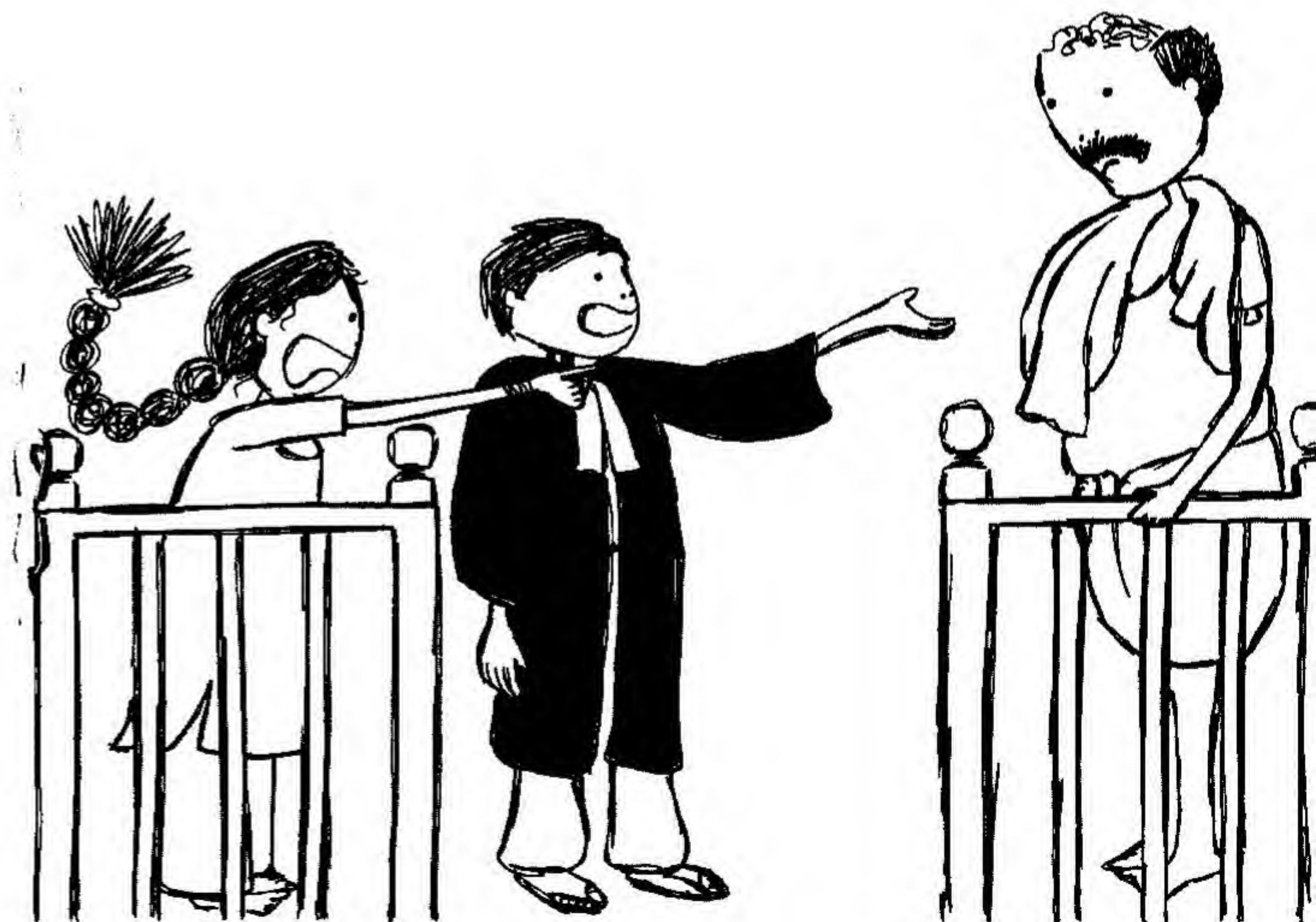
रामू : तुमने टिल्लो को फूल तोड़ने पर डांटा था?

माली : नहीं छोटे सरकार। बिटिया कली-कली
तोड़ के फेंकती रही, तो हमने मना कै दिया।
...हमका तो भइया...

रामू : (हथौड़ा ठोकते हुए) शट अप ! बिटिया का
मना कै दिया ? क्या माने है ?

गोपी : हां दादा... अरे जज साहब, हमको भी गोविंद
माली ने बाबूजी से डांट खिलवाई थी।

चंपी : हमको भी कहा था कि कान खिचवाएंगे।



रामू : आर्डर ! आर्डर ! मैं कहता हूँ मिस्टर गोपीनाथ,
आप टिल्लो देवी के वकील की हैसियत से
हैं कि आपको खुद कुछ शिकायत है ?

गोपी : (सकपकाकर) जी... जी नहीं । जी हां, मुझे
जो कहिए, चाहे जो समझिए । मैं तो वकील
भी हूँ और फरियादी भी हूँ।

सब बच्चे : गोविंद माली को सजा दी जाए।

रामू : आर्डर ! आर्डर ! हां, माली तुमको क्या कहना

है इस बारे में ?

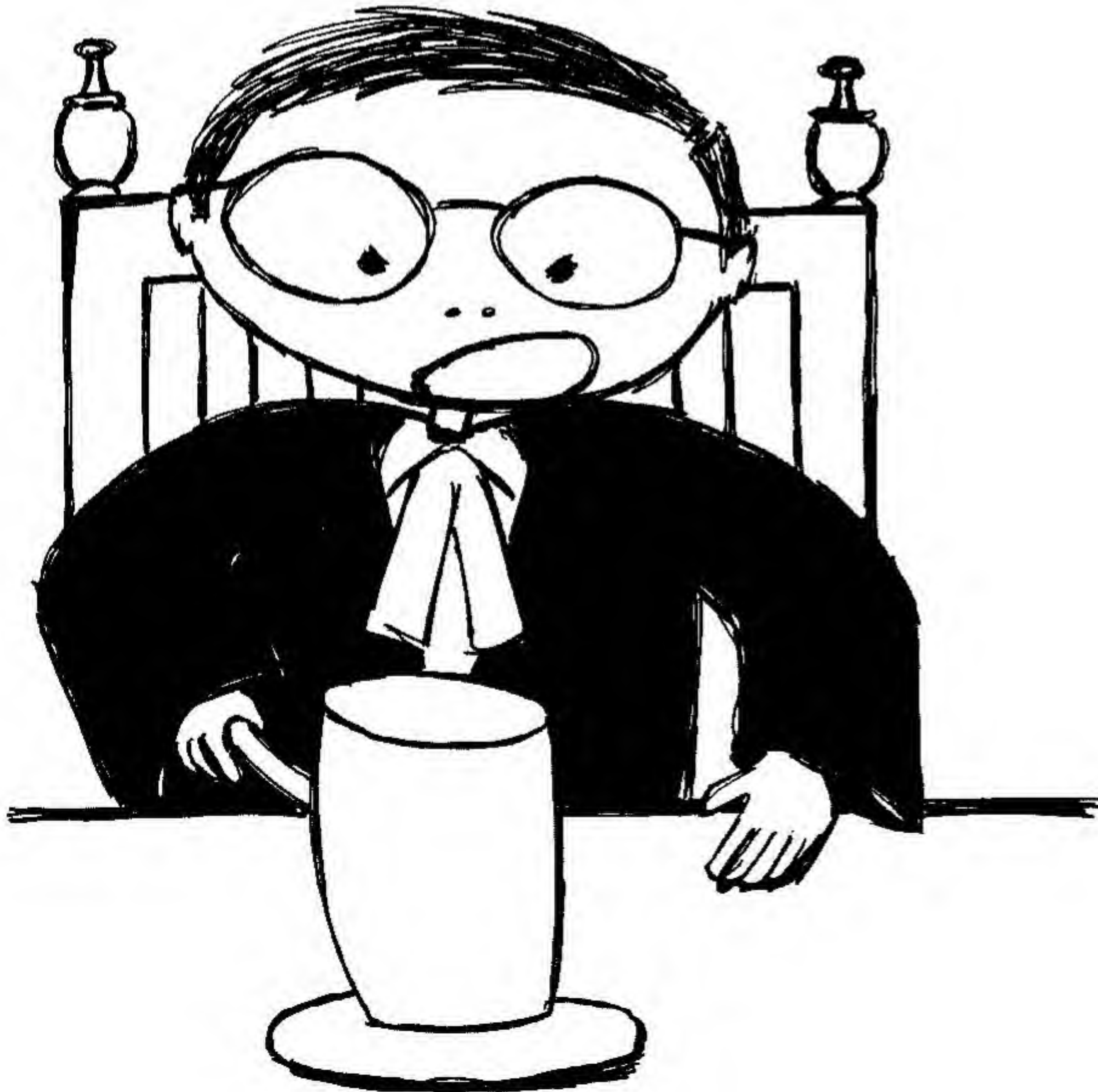
माली : अब छोटे सरकार मैं का कहें ? जौन कुछ
हमका कहे का रहा हम तो पहिलेन कहि
दीन। हम का करी ? बड़े सरकार रोजै फूल
गिनत हैं। जब फूल गायब रहत है, बड़े
सरकार उनके हिसाब मांगत हैं। फिर तू पंच
जी सब फूल तोड़ लेत हौ तों फिर कहां से
हम उनका हिसाब देई ?

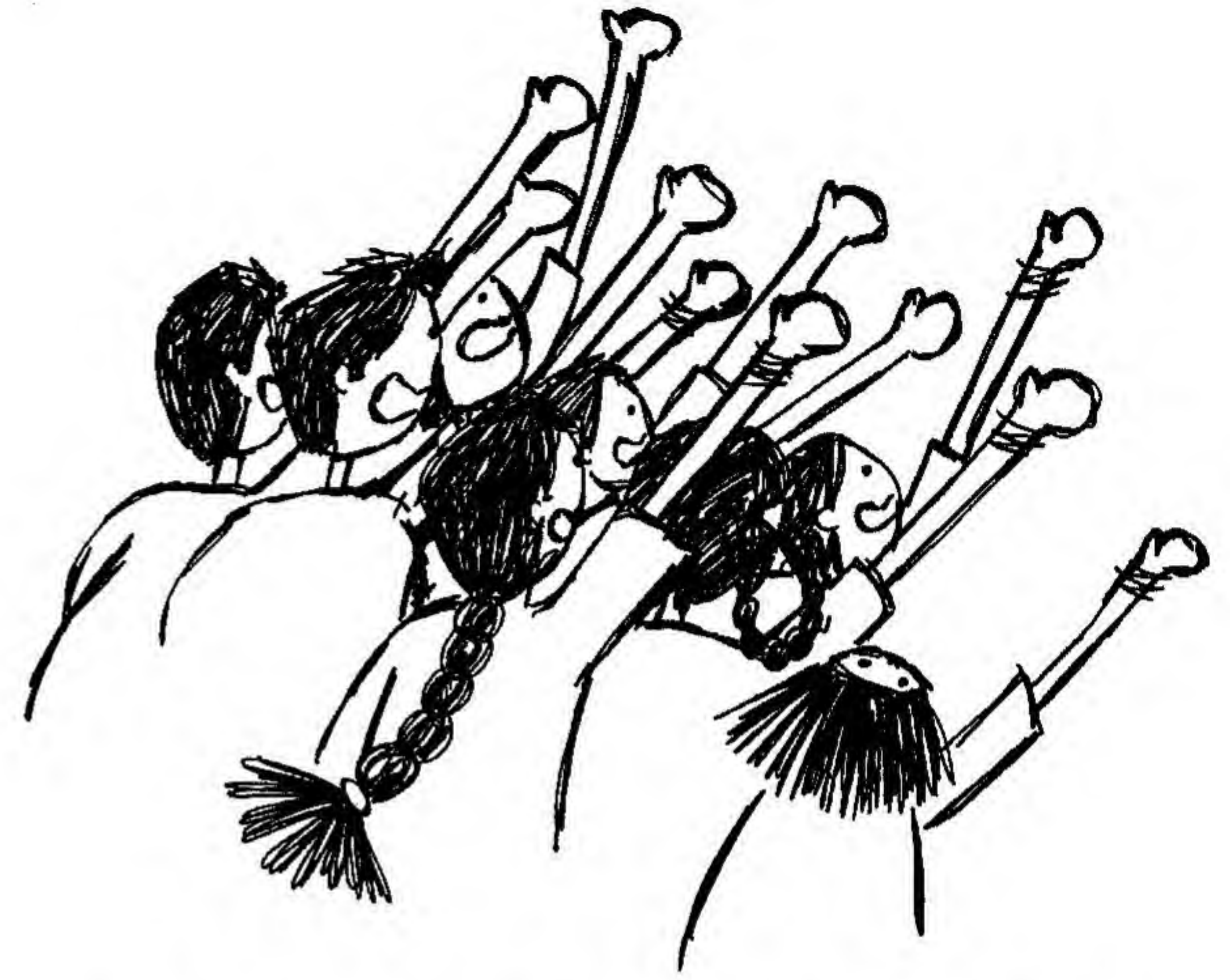
रामू : कुछ नहीं... यह सब फिजूल बात कर रहे
हो।

चंपी : फूल बच्चों के लिए नहीं है तो क्या बूढ़ों के
लिए है ?

टिल्लो : क्या बाबूजी फूलों से खेलते हैं ?

गोपी : माली झूठ बोलता है। बाबूजी तो कुछ नहीं
कहते। यही हम लोगों पर अपनी साहबी
जमाते हैं। अब तो हमने और राजू ने तय
किया था कि अगर फिर कभी हमारी शिकायत
की तो हम लोग इन्हें देख लेंगे।





रामू : आर्डर ! आर्डर ! शांत... गड़बड़ बात अदालत में मत बोलिए। माली साहब, आपका कोई वकील भी है ?

माली : सरकार हमार कौन वकील है ? जौन कहित है मान लेव तौ मान लेव। नाही तो फिर इहै समुझि लेव कि हम जूठै कहित हैं।

सब : हां, हां, झूठ है, बिल्कुल झूठ।

रामू : अच्छी बात है। हर एक आदमी ने इनकी बात भी सुन ली है। और टिल्लो देवी की बात भी पता चल गई है। अब जूरी लोगों की क्या राय पड़ती है ?

जूरी : (सभी सदस्य) इनको फांसी दी जाए।

सब : हां, हां, बहुत ठीक। (ताली बजती है।)

रामू : नहीं, मेरी राय है कि जूरी ने बहुत सख्ती से काम लिया है। अब भी कुछ सोच-समझ लिया जाए तब फिर जूरी अपनी राय दे। सजा बहुत कड़ी दे दी गई है।

जूरी : (सभी सदस्य) कालापानी भेजा जाए।

एक स्वर : लेकिन वहां पर यह बाग की रखवाली करेंगे।

दूसरा स्वर: और वहां के बच्चों को भी तकलीफ देंगे।

सब : नहीं ! नहीं ! कालापानी नहीं, फांसी दी जाए।

रामू : (हथौड़ा ठोकता हुआ) आर्डर, आर्डर! जूरी लोग क्या कहते हैं ?

जूरी : हमारी राय में जज साहब खुद ही अपनी राय दें।

माली : छोटे सरकार। अब आप लोग जौन-जौन कहि हैं, तौन-तौन हम करब। हमका जौन चाहै तौन सजा दै लैव। चाही तो माफ कै दैव।

जूरी : (सब लोग) नहीं, नहीं, हरगिज माफ नहीं किया जाए। इस तरह से करने पर इनकी आदत खराब हो जाएगी। आप लोग सब क्या कहते हैं ?

सब लोग : फांसी, फांसी। (चिल्लाकर) फांसी दो, इनको।

रामू : (बहुत गंभीर होकर निर्णय देता है) आर्डर, आर्डर ! सुनिए। जो कुछ भी दोनों पक्षों ने कहा है, मैंने सब सुन लिया। मैं समझता हूँ कि इन्हें माफ कर देना इस तरह की हरकतों को भड़काना होगा। इसीलिए सोचता हूँ कि इन्हें सजा जरूर देनी चाहिए।

सब लोग : (चिल्लाकर) वाह—वाह !
(ताली बजाते हैं, सीटी बजाते हैं।)

रामू : शांत, शांत ! जी हां, यही सोच—समझकर मैं माली को यह सजा देना चाहता हूँ कि वे पचास अमरूद हम लोगों को लाकर दे जो हम लोग आपस में बांटकर खाएंगे।

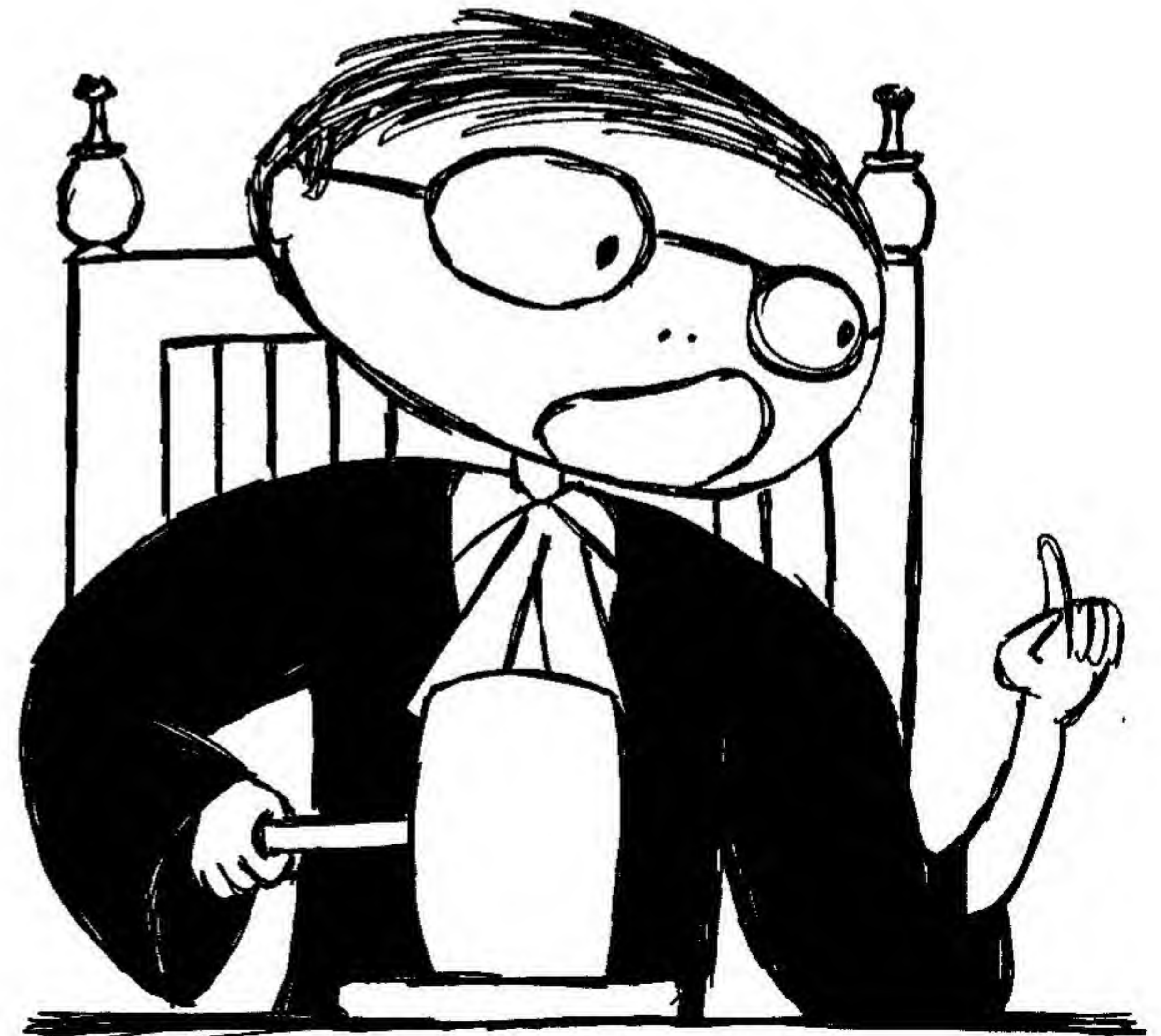
सब लोग : वाह—वाह ! (ताली बजाते हैं।)

रामू : जी हां। और मैं दूसरी बात यह कहना चाहता हूँ कि आइंदा से जब वे कभी भी बाग में

रहे तब हम लोग वहां न जाएं। अगर जाएं भी तो उनकी आंख बचाकर जाएं। अगर वे कभी हमें देख भी ले तो अनदेखा करें।

सब लोग : वाह—वाह ! वेरी गुड। (शोर)

रामू : शांत। जी हां। इतवार के दिन हम लोगों की छुट्टी रहती है। उस दिन माली बिल्कुल ही बाग में न जाए।



सब लोग : बहुत अच्छा... बहुत अच्छा... वाह वाह !

रामू : सब लोग खुश हैं। माली दादा आप भी खुश
रहो कि फांसी की सजा आपको नहीं दी
गई।

माली : (सांस खींचकर) का कही छोटे सरकार।
जौन-जौन बात हमका कह्यो उतौ हमरे लिए
कच्ची फांसी हैं गई और का कही...

सब : (चिल्लाकर) रामू दादा की जै !



भारत ज्ञान विज्ञान समिति

समाज के विकास में जन विज्ञान आंदोलन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। देश में गरीबी, गैर-बराबरी, अन्याय और अज्ञान को खत्म करने और सहयोग, समानता और न्याय के आधार पर एक लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में यह आंदोलन लगातार काम कर रहा है। देश में फैली असाक्षरता को दूर करने के लिए इस आंदोलन ने वर्ष 1989 में भारत ज्ञान विज्ञान समिति की स्थापना की। जिसका मुख्य काम जनता को अपनी बदहाली के कारणों को जानने के लिए प्रेरित करना है। जनता की सोच को तार्किक और विज्ञान सम्मत बनाने के लिए विज्ञान का प्रसार करना है। आज भारत ज्ञान विज्ञान समिति की सांगठनिक उपस्थिति देश में 22 प्रदेशों के 400 जिलों और 10,000 से अधिक पंचायतों में है। जहां वो साक्षरता, प्राथमिक शिक्षा, स्त्री सशक्तीकरण, पंचायती राज और स्वास्थ्य जैसे विविध सामाजिक क्षेत्रों में कार्यरत है।

कला जत्थों, संगोष्ठियों, प्रकाशनों, प्रदर्शनियों और अन्य सामाजिक-सांस्कृतिक तरीकों से समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और भ्रांत धारणाओं को समाप्त करने के लिए संगठन लगातार काम कर रहा है। बच्चों के लिए 'मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा कानून' को लाने एवं लागू करने में भी संगठन का महत्वपूर्ण योगदान है। जनवाचन अभियान इसी प्रक्रिया का हिस्सा है। जिसके तहत अब तक 350 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। जिनमें नवसाक्षरों, नवपाठकों के साथ ही बच्चों के लिए श्रेष्ठ और तार्किक साहित्य का प्रकाशन शामिल है। देशी-विदेशी महान लेखकों की प्रसिद्ध रचनाओं के अलावा विभिन्न भाषा के भारतीय लेखकों की रचनाएं भी प्रकाशित की गई हैं। जिन्हें कम से कम मूल्य में अधिक से अधिक पाठकों को उपलब्ध करवाना इस संगठन का उद्देश्य है। भारत ज्ञान विज्ञान समिति एक गैर मुनाफा वाला संगठन है। श्रेष्ठ साहित्य को जन-जन तक पहुंचाना ही इसका मुख्य मकसद है।